भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए ८ से १२ अक्टूबर, २०१५ साप्ताहिक सलाह

(४७ वां मानक सप्ताह)

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/जिला	अक्टूबर, २०१५ माह में वर्षा की स्थिति (मि.मी)						
दिनांक	6	7	8	9	10	11	12
पंजाब							
भटिंडा	0	0	0	0	0	0	0
फिरोजपुर	0	0	0	0	0	0	0
मुकतसर	0	0	0	0	0	0	0
मानसा	0	0	0	0	0	0	0
हरियाणा							
सिरसा	0	0	0	0	0	0	0
हिसार	0	0	0	0	0	0	0
फ़तेहाबाद	0	0	0	0	0	0	0
राजस्थान							
हनुमानगढ़	0	0	0	0	0	0	0
श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0
बांसवाड़ा	0	0	0	0	0	0	0
उड़ीसा							
कोरापुट	10	3	0	0	0	0	0
कालाहांडी	6	0	0	0	0	0	0
बोलांगीर	0	0	0	0	0	0	0

साप्ताहिक परामर्श

फसल परिप क्वावस्था में है। *जी.आर्बोरियम* में सभी स्थलों पर तथा *जी.हिर्सुटम* में कुछ स्थलों पर कपास चुनाई का कार्य चल रहा है। देसी तथा अमेरिकन कपास को एक साथ न मिलाएँ। जिन किसानों ने देसी कपास लगाई है वे अगले वर्ष देसी का बीज प्रयोग करना चाहेंगे। जैसिड तथा फूलकीट की संख्या बहुत ही कम है। सफेदमक्खी की संख्या बढ़ रही है तथा इसकी संख्या अपने दूसरे शीर्ष पर इसी सप्ताह पहुँच सकती है। किसान भाई इसके नि यंत्रण के लिए आवश्यक्तानुसार डायफेंथ्युरान या इथिआन का छिड़काव करें। देसी कपास में कुछ स्थानों पर धब्बेदार सूँडी का प्रकोप दिखाई दे रहा है। कपास के अनेकों खेतों में मिलीबग का प्रकोप भी दर्ज किया गया है। इन खेतों से कपास की लकड़ियाँ उखाड़ते व नष्ट करते समय सावधानी बरतें। किसान भाई साफ-सुथरी कपास चुनें। बाजार में अच्छा भाव लेने के लिए साफ-सुथरी कपास चुनकर सुखा लें। चुनाई प्रत्येक 8 से 10 दिनों के अंतराल पर करें। खेतों में अधिकांश क़िस्मों/संकरों में पत्ती मोड़क विषाणु का प्रादुर्भाव बढ़ रहा है। वर्षा के बाद लालपत्ती रोग देखा जा रहा है। इसके प्रबंधन के लिए 1.0 % मेग्नीशियम सल्फेट का छिड़काव करें। पद्देती फसल में अपेक्षाकृत निचली पत्तियों पर काली फफूँद देखी जा रही है। सभी खेतों में जैसिड की संख्या आर्थिक हानि की सीमा से कम है। *स्पोडोप्टेरा* तथा *सोलेनोप्सिस* मिलीबाग का प्रकोप नाममात्र का है। *हेलिकोवर्पा* तथा *एरियास* प्रजाति का प्रकोप भी नाममात्र को कुछ स्थलों पर कुछ खेतों में देसी कपास में दर्ज किया गया है। हिसार, सिरसा, फतेहाबाद, जिंद तथा भिवानी जिलों में कपास पत्ती मोड़क विषाणु का प्रकोप 3 ग्रेड हानि स्तर पर रिकार्ड किया गया है। जीवाणु पत्ती गलन रोग कपास पर नहीं देखा गया है। कुछ खेतों में फफूंदजनित रोगों का प्रकोप बहुत कम पाया गया है। खेत में एक-तिहाई गूलर खुलने के बाद सिंचाई न करें। सड़े हुए गुलरों से कपास नहीं चुनें। सूक्ष्मजीवों के कपास में संक्रमण से बचने के लिए कपास को भण्डारण से पहले सुखा लें। राजस्थान में फसल पुष्पन और गूलर खुलने की अवस्था में है। सनवा घास (*इकाइनोक्लोआ* प्रजाति), मोथा (*सायपेरस* प्रजाति), दूब घास (*सायनोडन* प्रजाति) तथा सांथी (*ट्रायेंथेमा* प्रजाति) खरपतवार मुख्यत: कपास के खेतों में पाई गई है।

फसल गूलर विकास तथा परिपक्वावस्था में है। रस चूसक कीटों, *स्पोडोप्टेरा* तथा गूलर की सूंडियों का प्रकोप देखा जा रहा है लेकिन सिर्फ जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर से ऊपर दर्ज की गई है। कुछ छुटपुट स्थलों पर जीवाणु करपा का प्रकोप देखा गया है। रस चूसक कीटों की संख्या के नियंत्रण के लिए बुप्रोफेजिन अथवा डायफेंथ्यूरान का छिड़काव करें। परिशिष्ट में दिए गए अनुशंसित उपायों से मुरझान तथा लाल पत्ती रोग की समस्या से निपटें। शीर्ष पुष्पन तथा गूलर निर्माण अवस्था में डी.ए.पी. तथा सूक्ष्म पोषकतत्वों के अनुप्रयोग से अधिक उपज लेने के लिए फसल में अधिक

								गूलर धारण में मदद मिलेगी। कपास की दो कतारों के मध्य आड़ी मेंढ बनाकर वर्षाजल को संरक्षित करें।
गुजरात								फसल पुष्पन, कली तथा गूलर निर्माण अवस्था में है। फसल की सेहत अच्छी है। एफिड, सफेदमक्खी, फूलकीटों की संख्या आर्थिक हानि सीमा से कम दर्ज की गई है। जैसिड संख्या (9-22/3 पत्तियां/पौधा) आर्थिक हानि सीमा से अधिक रिपोर्ट की गई है। मिलीबग (0-1 ग्रेड/ पौधा) तथा मिरिडबग (1 से 2/शीर्ष 5 कलियां) आर्थिक हानि स्तर से कम पाए गए हैं। *एल्टरनेरिया* पत्ती धब्बा तथा जीवाणु करपा का प्रकोप नाममात्र देखा गया है। **गुलाबी सूँडी :** गुलाबी सूँडी का प्रकोप कुछ खेतों में बीटी कपास में आर्थिक हानि स्तर से कम पाया गया है। इस सूँडी का प्रकोप सितम्बर के अंतिम सप्ताह से प्रारंभ होकर अक्टूबर के अंत तक हानि पहुँचने के स्तर तक पहुँच जाएगा जो नवंबर-दिसंबर तक और बढ़ेगा। किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि इसके पतंग के निरीक्षण का लिए फसल में 5-6 फिरोमोन ट्रैप/रात्रि सतत 3 रात्रि तक आने की आर्थिक हानि संख्या पहुँचने अथवा 10% क्षतिग्रस्त हरे गूलरों में छोटी सूँडी पाए जाने पर क्वीनालफ़ास अथवा थायोडीकार्ब का छिड़काव एक बार अक्टूबर में तथा पायरेथ्राइड विषेशरूप से लेंबड़ा-सायहेलोथ्रिन का छिड़काव एक बार नवंबर में करें। थायोडिकार्ब का एक से अधिक बार छिड़काव करने पर बारानी खेतों में लाल पत्ती रोग की समस्या बढ़ सकती है। इस सूँडी का नियंत्रण नहीं करने पर अक्टूबर-नवंबर में यह सूँडी भारी नुकसान पहुँचा सकती है। अक्टूबर के अंत तक किसी भी हालत में पायरेथ्राइड का छिड़काव न करें। कीटनाशक-मिश्रणों का भी अनुप्रयोग कभी नहीं करें। ऐसा करने से सफेद मक्खी की संख्या बढ़ सकती है। किसान भाई फसल को दिसंबर तक ही समाप्त कर दें। ऐसा करना गुलाबी सूँडी का प्रकोप कम करने तथा गूलर कि सूंडियों में बीटी कपास के लिए प्रतिरोधकता विकास को टालने के लिए आवश्यक है। पिछले वर्ष की कपास की लकड़ियाँ कुछ खेतों की मेंढ पर रखी देखी जा रही हैं। इन्हें तुरन्त नष्ट कर दें। कपास का घर अथवा भण्डार में रखा पुराना बीज गुलाबी सूँडी के पतंग का स्त्रोत बन सकता है। यदि यह बीज क्षतिग्रस्त है तो इसे तुरन्त नष्ट कर दें।
अमरेली	0	0	0	0	0	0	0	
भावनगर	0	0	0	0	0	0	0	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	0	
राजकोट	0	0	0	0	0	0	0	
भरूच	0	0	0	0	0	0	0	
सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	0	
सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
वडोदरा	0	0	0	0	0	0	0	
पाटन	0	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	0	0	0	0	0	0	0	
मध्यप्रदेश								
खरगोन	0	0	0	0	0	0	0	फसल की सेहत अच्छी है। गर्मी के मौसम में बोई गई फसल पुष्पन अवस्था में तथा सामान्य समय पर बोई गई फसल वानस्पतिक अवस्था में है। नाशीकीट व रोगों का प्रकोप नहीं देखा गया है। किसी खेत में रस चूषक कीटों की संख्या आर्थिक हानि स्तर पर पहुँचती है तो 2.0% नीम तेल के साबुन में इमल्शन का छिड़काव करें। नत्र तथा रासायनिक कीटनाशकों की अधिक मात्रा का इस्तेमान न करें।
धार	0	0	0	0	0	0	0	
खंडवा	0	0	0	0	0	0	0	
महाराष्ट्र								
नागपुर	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	मानसूनपूर्व लगाई गई कपास गूलर खुलने तथा मानसूनी कपास गूलर विकास अवस्था तथा जुलाई में लगाई गई कपास गूलर आने की प्रारंभिक अवस्था में है। कपास की सभी प्रजातियों में कली झड़न देखी गयी। बीटी क़िस्मों में कलियों का सूखना भी दर्ज किया गया है। कली झड़न रोकने के लिए प्लानोफिक्स 5.0मिली+100ग्रा. यूरिया प्रति 10 लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें। एक सप्ताह बाद दूसरा छिड़काव करें। कुछ स्थानों पर जैसिड और सफेद मक्खी का प्रकोप देखा गया है। बीटी रहित कपास में गूलर की सूंडियों के नियंत्रण के लिए फ्लूबेंडायमाइड का छिड़काव करें। जून-जुलाई में बोई गई देसी और अमेरिकन कपास में अमेरिकन सूँडी का प्रकोप आर्थिक हानि सीमा से अधिक पाया गया है। बीटी कपास के खेतों में सफ़ेद मक्खी की संख्या बढ़ने पर पीले रंग की चिपक ट्रैप लगाएं। मृदा नमी
वर्धा	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
चंद्रपुर	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
यवतमाल	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
अमरावती	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
अकोला	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
बुलढाना	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
परभणी	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
नांदेड़	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	
बीड़	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	**0**	

वासिम	0	0	0	0	0	0	0	पर्याप्त होने पर इस अवस्था में डी.ए.पी. का अनुप्रयोग करें। इससे अधिक उपज प्राप्ति के लिए गूलर स्थापन तथा गूलर धारण अधिक होगा अन्यथा पुष्पन अवस्था में 2.0% यूरिया अथवा 2.0% डी. ए.पी. का छिड़काव करें। गूलर विकास अवस्था में 1.0% यूरिया और 1.0% मैग्नीशियम सल्फेट का छिड़काव करें। गूलर की सूँडी के प्रबंधन के लिए पायरेथ्राइड का प्रयोग न करें। परिशि ष्ट में दी ग ई अनुशंसित पद्धति का अनुप्रयोग करें। जिन जिलों का प्रतिशत जहाँ जैसिड हानि आर्थिक हानि स्तर से ऊपर वे हैं- अकोला (70.30%) व जालना (61.95%)। जैसिड का प्रकोप जहां 10-30% गांवों में आर्थिक हानि सीमा से अधिक पाया गया वे हैं नांदेड (17.66%)। जिन क्षेत्रों में जैसिड प्रकोप 10% से कम रहा वे हैं- औरंगाबाद (7.45%), परभणी (7.23%), बीड (6.12%), यवतमाल (4.1%), हिंगोली (4.02%) तथा नागपुर(2.67%)। फूलकीट का प्रकोप अमरावती और जालना में नहीं के बराबर रहा। अमरावती जिले में सफेद मक्खी का प्रकोप आर्थिक हानि सीमा से अधिक 34.15% गांवों में पाया गया। धुले जिले में 50% से भी अधिक गांवों (56.25%) में लाल पत्ती रोग का प्रकोप रहा, उससे कम परभणी (47.23%) गांवों में, अहमदनगर (42.58% गांवों में), नागपुर (32.14% गांवों में), चन्द्रपुर (23.68%) गांवों में तथा गडचिरोली (18.18% गांवों में) दर्ज किया गया।
धुले	0	0	0	0	0	0	0	
जलगांव	0	0	0	0	0	0	0	
जालना	0	0	0	0	0	0	0	
औरंगाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
तेलंगाना								फसल फलन अवस्था में है। नत्र व पोटाश उर्वरकों की दूसरी व तीसरी विभाजित मात्रा आवश्यकतानुसार दें। 1-2% यूरिया अथवा 1-2% पोटेशियम नाइट्रेट जैसे पोषकों का छिड़काव करें। इसके साथ 1.0% मैग्नीशियम सल्फेट का प्रयोग भी करें। जैसिड, फूलकीट जैसे रसचूषक नाशीकीटों के नियंत्रण के लिए एसीफेट 1.5ग्रा./ली. अथवा फिप्रोनिल 2.0मिली./ली. की दर से छिड़काव करें। खेत में पानी जमा न हो पाए इसका ध्यान दें। *राइजोक्टोनिया* सड़न की रोकथाम के लिए कॉपर आक्सीक्लोराइड @ 3.0ग्रा./ली. पानी की दर से पौधों के तने के पास तर करें। फफूंदजनित पत्ती धब्बा रोगों के नियंत्रण के लिए प्रोपिकोनजोल @ 1.0मिली./ली. अथवा मेंकोजेब+कारबेंडेजिम 2ग्रा./ली. के फसल पर छिड़काव की सिफ़ारिश की जाती है। अधिक तापमान और अधिक आद्रता के कारण *स्पोडोपटेरा* तथा चूषक कीटों की संख्या दर्ज की गई है। जैसिड तथा सफेदमक्खी के नियंत्रण के लिए परामर्शी के परिशिष्ठ में दी गई सिफ़ारिशों को काम में लाएँ। पायरेथ्राइडों का छिड़काव न करें।
आदिलाबाद	0	0	0	0	0	0	4	
कारिंगर	10	4	0	0	0	3	4	
खम्मन	36	4	4	3	0	3	0	
करीमनगर	10	4	0	0	0	3	0	
नालगोंडा	36	5	4	3	0	6	5	
आंध्रप्रदेश								
गुन्टूर	46	0	6	4	0	8	4	
प्रकासम	46	9	8	11	13	31	22	
कर्नाटक								पिछले सप्ताह उत्तरी कर्नाटक के कुछ भागों में एक दिन में 70मि.मी. से भी अधिक भारी वर्षा रिपोर्ट की गई है। इस स्थिति में फसल में जमा वर्षाजल की निकासी शीघ्र करें और फसल में 25 कि.ग्रा. यूरिया/एकड़ लगाएँ। रोगग्रस्त झडी हुई पत्तियों और कलियों को एकत्र करके फसल को साफ रखें और उस कचरे को जमीन में दबाकर नष्ट कर दें , अथवा जला दें। गुलाबी सूँडी का प्रबंधन फसल सुरक्षा के उचित उपायों द्वारा करें। देसी कपास में 30कि.ग्रा. यूरिया/एकड़ दें। फसल पर 19:19:19 घुलनशील उर्वरक 1.0% तथा 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट और प्लानोफिक्स (5मिली/15ली. पानी की दर से) के साथ 15 दिनों के अंतराल पर दो छिड़काव करें। इससे लाल पत्ती रोग तथा कली झड़न कम होगा। मिरिड तथा मिज कीटों के प्रकोप के लिए फसल का निरी क्षण करते रहें। इनकी संख्या आर्थिक हानि स्तर पर पाए जाने पर विशिष्ट फसल संरक्षण उपायों को तुरन्त काम में लाए।
धारवाड़	11	7	11	5	8	28	5	
हवेरी	13	16	16	12	8	7	7	
मैसूर	50	33	10	12	33	11	0	
तमिलनाडु								फसल वानस्पतिक अवस्था में है। फसल में खरपतवारों का प्रकोप देखा जा रहा है जिसके लिए उचित खरप तवारनाशक का छिड़काव करें। एफिड का प्रकोप आर्थिक हानि के अंदर ही दर्ज किया गया है। ताना घुन तथा जड़गलन के बचावात्मक उपाय के रूप में पौधों की जड़ों में क्लोरपायरिफास @750मिली./हे. के साथ बाविस्टिन @750ग्रा./हे. का पानी में घोल डालें। जैसिड , एफिड, सफेद मक्खी तथा फूलकीट जैसे रसचूषक कीटों का प्रकोप फसल में देखा जा रहा है। वर्षा से इन कीटों की
पेरंबलुर	4	5	6	10	13	6	9	
सेलम	11	14	9	39	45	17	21	
त्रिची	15	9	3	5	7	3	5	
विरडुनगर	22	12	13	40	37	11	11	

संख्या नियंत्रण में रहेगी। अत: इनके नियंत्रण के उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। अगले सप्ताह आवश्यक होने पर इस परामर्शी में रस चूषक कीटों से प्रबंधन के लिए दिए गए उपाय अपनाएं।

आदर्श वर्षा	< 5	5-20	20-50	50-80	> 80
वर्षा मि.मी					